Land and building - (15)

प्रश्न सत्यापन से क्या समझते हैं? सत्यापन एवं मूल्यांकन में अन्तर स्पष्ट करें। सत्यापन के उद्देश्य, महत्व को स्पष्ट करें। सत्यापन के सम्बन्ध में अंकेक्षक के कर्तव्य का वर्णन करें।

What do you mean by Verification? What is difference between Verification & Valuation? Describe objects & Importance of Verification. Duties of an Auditor in relation to verification.

Ans सत्यापन → Verification → सत्यापन से आशय किसी वस्तु या मूल्य की वास्तविकता की सत्यता को प्रमाणित करने से है। सत्यापन वास्तव में अंकेक्षण की एक विधी है, जिसमें अंकेक्षक चिट्ठे में प्रदर्शित सभी सम्पत्तियों व दायित्वों की सत्यता को प्रमाणित करता है। सत्यता का अर्थ है कि चिट्ठे की तिथि पर समस्त सम्पत्तियां संस्था में विद्यमान थी, उनपर स्वामित्व भी संस्था का था, उनका मूल्यांकन भी विधा आदि। अंकेक्षक अपनी रिपोर्ट में यह भी प्रमाणित करता है कि चिट्ठे द्वारा व्यापार की वास्तविक स्थिति का सही परिचय मिलता है। अंकेक्षक को इसे प्रमाणित करने का आधार 'सम्पत्तियों एवं दायित्वों का सत्यापन' ही है। कभी-2 प्रमाणन एवं सत्यापन को एक समझा जाता है, मगर वास्तव में ऐसा नहीं है, प्रमाणन में प्रमाणकों के आधार पर खातों के लेखों की जांच की जाती है, जबकि सत्यापन में सम्पत्तियों एवं दायित्वों की जांच करनी होती है।

सत्यापन के सबन्ध में लेंकास्टर (Lancaster) द्वारा निम्न परिभाषा दी गयी है

सम्पत्तियों का सत्यापन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा अंकेक्षक चिट्ठे के सीर्ष (दांए भाग) भाग की शुद्धता को प्रमाणित करता है, तथा यह ध्यान देना चाहिए कि इसके तीन विभिन्न उद्देश्य हैं -

(i) सम्पत्तियों की विद्यमानता का सत्यापन (ii) सम्पत्तियों का मूल्यांकन (iii) उनके प्राप्त करने का अधिकार

उपर्युक्त परिभाषा के आधार पर हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि सम्पत्तियों एवं दायित्वों के सत्यापन से आशय चिट्ठे में प्रदर्शित सभी सम्पत्तियों एवं दायित्व के बारे में यह जांच करना है कि ये सब चिट्ठे की तिथी को संस्था में विद्यमान थी, इन पर स्वामित्व संस्था का है, इनका मूल्यांकन उचित रीति से किया गया है तथा यह संस्था के अधिग्रहण में है।

सत्यापन के सबन्ध में 'चन्दन आयल स्टोव्स कम्पनी बनाम सियर हसलाम एन्ड कम्पनी (1904) का केस महत्वपूर्ण है। इस केस में मुख्य न्यायधीश 'अलवरस्टोन' ने निर्णय दिया कि चिट्ठे में वर्णित सम्पत्तियों की विद्यमानता की जांच करना अंकेक्षक का कर्तव्य है, यदि वह अपने कर्तव्यों को पूरा करने में विफल रहता है, तो नियोक्ता को होने वाली हानि के लिए अंकेक्षक उत्तरदायी होगा।

Difference between Verification & Valuation

(3)

सत्यापन तथा मूल्यांकन में अन्तर :-

सामान्यतः मूल्यांकन एवं सत्यापन में कोई विशेष अन्तर नहीं है, क्योंकि सत्यापन में ही मूल्यांकन शामिल है अर्थात मूल्यांकन सत्यापन का ही एक आवश्यक अंग है। प्रत्येक सम्पत्ति जिस मूल्य पर चिट्ठे में दिखायी गयी है, वह उचित है या नहीं इस बात का पता लगाना मूल्यांकन से सबन्ध रखता है। अंकेक्षक को सम्पत्तियों के मूल्यांकन का पूर्ण रूप से सत्यापन करना चाहिए क्योंकि चिट्ठे की शुद्धता तथा व्यापार में लाभ और हानि इसी पर निर्भर करती है। फिर भी सत्यापन एवं मूल्यांकन में प्रमुख अन्तर इस प्रकार है।—

क्रम संख्या	अन्तर का आधार Basis of diff.	सत्यापन Verification	मूल्यांकन Valuation
1	अर्थ	सत्यापन का अर्थ अंकेक्षक द्वारा चिट्ठे में प्रदर्शित विभिन्न मदों की विद्यमानता, मूल्यांकन प्रभार (Charge) और शुद्धता की पुष्टि करने से है।	मूल्यांकन का अर्थ अंकेक्षक द्वारा सम्पत्तियों के पूर्व निर्धारित मूल्यों की आलोचनात्मक जांच से है जो वह लेखाकर्म के सामान्यतः स्वीकृत सिद्धान्तों और परिपाटियों के आधार पर करता है।
2	किसके द्वारा (By whom)	सत्यापन स्वयं अंकेक्षक या किसी वरिष्ठ सहायक के द्वारा किया जाता है।	मूल्यांकन संस्था के प्रबन्धकों द्वारा किया जाता है किन्तु उसके सही होने की जांच अंकेक्षक द्वारा की जाती है।

क्रम संख्या	अन्तर का आधार Basis of Difference	सत्यापन Verification	मूल्यांकन Valuation
3	क्षेत्र Scope	सत्यापन का क्षेत्र व्यापक है क्योंकि सत्यापन में मूल्यांकन भी शामिल है।	मूल्यांकन का क्षेत्र संकुचित है। क्योंकि यह सत्यापन का एक भाग है।
4	उद्देश्य Objects	सत्यापन निम्न की जांच करने के लिये कराया जाता है (i) विद्यमान (ii) स्वामित्व (iii) अधिग्रहण (iv) प्रभार से मुक्त (v) उचित मूल्यांकन	मूल्यांकन का उद्देश्य यह है कि चिट्ठे में प्रदर्शित समस्त सम्पत्तियों एवं दायित्वों का मूल्य उचित एवं सही है।
5	गारण्टी अथवा दायित्व Guarantee	सत्यापन गलत होने पर अंकेक्षक स्वयं उत्तरदायी होगा।	अंकेक्षक सम्पत्तियों की सत्यता के बारे में कोई गारण्टी नहीं दे सकता क्योंकि वह मूल्यांकक नहीं है।
6	प्रकृति Nature	यह उद्देश्यात्मक जांच है अर्थात यह प्रमाणों की एक भौतिक जांच है।	यह एक विषयात्मक जांच है, अर्थात मूल्यांकनकर्ता या नियोक्ता के अधिकारी के प्रमाण-पत्र की एक विशेष जांच है।
7	प्राथमिकता Priority	सत्यापन का कार्य मूल्यांकन के कार्य के बाद होता है।	मूल्यांकन का कार्य सत्यापन से पहले होता है।
8	साक्ष्य (Evidence)	सत्यापन के लिये पर्याप्त मात्रा में भौतिक और प्रलेखनीय साक्ष्य उपलब्ध होने चाहिए।	मूल्यांकन हेतु बहुतकम प्रत्यक्ष साक्ष्य उपलब्ध होते हैं, अतः अंकेक्षक को एक बड़ी सीमा तक प्रबन्धकों के अनुमान पर निर्भर रहना पड़ता है

END

ASHOK KUMAR SINGH